16.05.2020

5 उद्यमशीलता - नए अविष्कार, तकनीकी ज्ञान व नयी खोज का आर्थिक दृष्टि से तब तक कोई मान्य नहीं जब तक उन्हें व्यावहारिक रूप न प्रदान कर दिया जाए। यह काम साहसी वर्ग को करना होता है। उद्यमशीलता का प्रमुख गुण है कि वह उत्पादन की नयी नयी तकनीक अपनाकर उत्पादन लागत को कम करे। प्रो० मिल के अनुसार - 'तकनीकी ज्ञान आर्थिक दृष्टि से तभी उपयोगी हो सकता है जब उसे नवप्रवर्तन के रूप में प्रयोग किया जाए और जिसकी पहल समाज के साहसी वर्ग द्वारा किया जाता है" नवप्रवर्तन के लिए ही उद्यमशीलता की आवश्यकता होती है। उद्यमशीलता के लिए जोखिम उठाना पड़ता है और जोखिम सफलता का दूसरा नाम है।

6. विदेशी पूंजी - विकासशील देशों में आन्तरिक साधनों के अभाव को विदेशी पूंजी से पूरा किया जाता है क्योंकि इन देशों में अन्तर्संरचना निर्माण तथा तीव्र औद्योगीकरण की विनियोग आवश्यकता को आन्तरिक बचतों एवं सार्वजनिक उधार से पूरा नहीं किया जा सकता है। इन देशों में प्रति व्यक्ति आय कम होने के कारण बचत भी कम होता है। इन संसाधनों की कमी को विदेशी पूंजी, विदेशी ऋण से पूरा किया जाता है। दीर्घकाल तक विदेशी पूंजी पर निर्भरता से देश में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

7. बाजार का आकार - अल्पविकसित देशों में

बाजार की अपूर्णताएं विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है। इन देशों में बाजार सीमित होती है जिससे उपभोक्ता की मांग बेलोच होती है जिससे उपक्रमी में विनियोग करने की प्रेरणा में कमी आती है। इससे पूंजी की मांग अनुपातिक होता है। बाजार के आकार को बढ़ाकर ही आर्थिक विकास की प्रक्रिया सुनिश्चित हो सकता है। बाजार के आकार में वृद्धि के लिए उत्पादकता को बढ़ाना आवश्यक है। इसके साथ बाजार को संगठित करना भी जरूरी है ताकि देश के समस्त भागों में कीमतों को एक स्तर को बनाए रखा जा सके।

गैर आर्थिक तत्व

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में गैर आर्थिक घटकों का प्रभावी योगदान है आर्थिक विकास हेतु गैर आर्थिक घटकों का निर्दिष्टीकरण कई अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया है गैर आर्थिक घटक भी एक विस्तृत शब्द है जिसके अधीन विभिन्न कारकों को सम्मिलित किया जाता है यह जानना आवश्यक होता है कि ऐसे अनार्थिक घटक कौन से है जो आर्थिक वृद्धि हेतु सर्वाधिक महत्व के है प्रो० बोल्डिंग का मत है कि आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए समाज विज्ञान सर्वाधिक उपयोग का है प्रो० अमर्त्य सेन अपनी पुस्तक "आर्थिक विकास एवं स्वातन्त्र्य" में विकास के अनार्थिक घटकों को एक नवीन परिप्रेक्ष में विश्लेषित किया है।

Scanned with CamScanner

(II) गैर आर्थिक तत्व —

(1) सामाजिक तथा संस्थागत तत्व —

मायर व बाल्डविन के अनुसार "आर्थिक विकास के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक आवश्यकता का होना उसी प्रकार जरूरी है जिस प्रकार आर्थिक आवश्यकताओं का।" किसी देश का आर्थिक विकास मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि लोगों में नूतन मूल्यों व संस्थाओं को अपनाने की कितनी प्रबल इच्छा है। वास्तव में गैर आर्थिक तत्वों के रूप में यह सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व संस्थागत तत्व आर्थिक विकास की उत्प्रेरक शक्तियाँ हैं। किसी देश का आर्थिक विकास तभी संभव होता है जब इन सामाजिक सांस्कृति व धार्मिक संस्थाओं का नव निर्माण नये सिरे से किया जाए।

छुआ-छूत, जाति-प्रथा संयुक्त परिवार प्रणाली, धार्मिक पाखण्ड उत्तराधिकार के नियम, अंधविश्वास, रूढि वादिता जैसे तत्व आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

(2) स्थिर तथा कुशल प्रशासन —

किसी देश का आर्थिक विकास बहुत एक सीमा तक उस देश के स्थिर व कुशल प्रशासन पर भी निर्भर करता है। यदि देश में शांति और सुरक्षा पायी जाती है तथा न्याय की उचित व्यवस्था होती है तो लोगों में काम करने तथा बचत करने की इच्छा पैदा होगी और फलस्वरूप आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। इसके विपरीत यदि देश में राजनैतिक अस्थिरता है अर्थात् सरकारें बार - बार बदलती रहती हैं तथा आंतरिक क्षेत्रों में अशांति का वातावरण व्याप्त है तो इससे विनियोग संबंधी निर्णयों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

सरकार की कुशलता तथा उचित प्रशासन व्यवस्था और उसके कर्मचारियों में निपुणता, ईमानदारी एवं उत्तरदायित्व की भावना आर्थिक विकास की पहली शर्त है।

प्रो० ब्रुइस का मत है कि — "कोई भी देश राजकीय सहयोग व उसका सक्रिय प्रोत्साहन पाये बिना आज तक आर्थिक विकास नहीं कर सका है।"

(2) अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ —

आर्थिक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का अनुकूल होना भी आवश्यक है। विश्व मंच पर राजनीतिक शांति बने रहने पर ही विकास व नव निर्माण कार्य संभव हो सकता है। अशांति और युद्धों की धधकती ज्वाला में विकास नहीं हो सकता। राजनीतिक शांति के अलावा विश्व के अन्य देशों में सद्भावना, सहयोग व वित्तीय सहायता का उपलब्ध होना आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि किसी देश का आर्थिक विकास अनेक तत्वों पर निर्धारित होता है। वस्तुतः यह कहना कि कौन सा महत्वपूर्ण है अत्यंत कठिन है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में इन सभी निर्धारक तत्वों का अपना एक विशेष स्थान है।